केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में 54वां स्थापना दिवस मनाया गया।

आज संस्थान में 54वां स्थापना दिवस व्याख्यान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर बी.आर. कम्बोज, उपकुलपति चौ. चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार रहे। सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा कहा कि केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान की स्थापना 1 मार्च 1969 को हुई थी। इसके तीन केन्द्र लखनऊ (उत्तर प्रदेश), भरूच (गुजरात) व केनिंग टाउन (प. बंगाल) में हैं। एक परियोजना समन्वयन इकाई है जिसके अन्तर्गत 10 केन्द्र कार्य कर रहे हैं। देश में 6.73 मिलियन हैक्टर मृदाएं लवणग्रस्त हैं। संस्थान द्वारा 21 लाख है. मृदाओं को सुधारा जा चुका है। संस्थान द्वारा मृदाओं को सुधारने के लिये जिप्सम तकनीकी, भूमिगत जलनिकास प्रणाली, जीरो टिलेज, संरक्षित खेती इत्यादि तकनीकों का विकास किया गया है। संस्थान द्वारा धान की तीन नई किस्में सीएस 56, सीएस 60 व सीएस 76 विकसित की गई हैं।

मुख्य अतिथि प्रो. बी. आर. कम्बोज ने कहा कि संस्थान ने अपने शोध कार्यों द्वारा देश की प्रगति में विशेष योगदान दिया है। इसके लिये संस्थान द्वारा कई तकनीकें विकसित की गई हैं जो कि सराहना के योग्य हैं। उन्होंने कल्लर जमीनों को सुधारने के संस्थान के प्रयास की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आज कौशल निर्माण बहुत जरूरी है। इसके द्वारा रोजगार बढ़ता है जोकि बेरोजगारी की समस्या दूर करने में सहायक होती है। कृषि के क्षेत्र में विशेष कौशल होना जरूरी है। कृषि में लागत बढ़ रही है व आय कम हो रही है जोकि आज मुख्य चैलेंज है। धान–गेहूँ फसल चक्र के स्थान पर फसल विविधीकरण बहुत जरूरी है। इसके लिये मक्का व मूंग की फसलें बोई जानी चाहिये। फसल अवशेष का सही उपयोग भी आवश्यक है।

इस अवसर पर संस्थान द्वारा भा.कृ.अनु.प.–के.मृ.ल.अनु.सं. सर्वोत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया। वैज्ञानिक वर्ग में 2020 के लिये डा. वी. के. खर्चे, अनुसंधान निदेशक, डा. पंजाब राव देशमुख, कृषि विद्यापीठ अकोला (महाराष्ट्र), तकनीकी वर्ग में 2021 के लिये श्री बृज मोहन मीना (तकनीकी अधिकारी) व प्रशासनिक वर्ग में 2021 के लिये श्रीमती प्रज्ञन्या के. पारिख (सहायक) को प्रदान किये गये। मुख्य अतिथि द्वारा 2 प्रकाशनों का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि ने शोध प्रक्षेत्रों का भ्रमण भी किया। मंच संचालन डा. एच. एस. जाट ने किया। इस अवसर पर सभी प्रभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचाारी उपस्थित रहे।